भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 3 | अक्टूबर 2002 | अंक 10

महीयसी महादेवीजी की वसीयत

''मेरा सम्पूर्ण जीवन हिन्दी साहित्य तथा शिक्षा को समर्पित रहा है। मेरी सम्पूर्ण चल-अचल सम्पत्ति मेरी लेखनी से अर्जित है और यह केवल मेरी है। उस पर किसी का अधिकार नहीं है। मैं अपनी सम्पूर्ण चेतना में बिना किसी दबाव के पर्याप्त विचार के उपरान्त एक ट्रस्ट 'साहित्य सहकार न्यास' के नाम से गठित करती हूँ।''

''मैंने अपनी अचल सम्पत्ति में से अशोक नगर का बंगला जिसकी मैं एकाकी और पूर्णरूप स्वामिनी हूँ और जिसका मूल्य एक लाख पचास हजार रुपये है, को 'साहित्य सहकार न्यास' के पक्ष में अपने समस्त अधिकारों सहित अधिकृत कर दिया है।

''इस बंगले का उपयोग 'साहित्य सहकार न्यास' के उद्देश्य की पूर्ति हेतु कार्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय तथा छोटे संग्रहालय के रूप में होगा। वाचनालय का निर्माण, न्यास अपनी सुविधा के अनुसार करेगा तथा इसका उपयोग शिक्षक तथा विद्यार्थी करेंगे।''

महीयसी महादेवी वर्मा ने इस वसीयत पर मृत्यु के कुछ समय पूर्व 29 मई 1985 को सायं 6.30 बजे हस्ताक्षर किये थे। महादेवीजी ने वसीयत के अंश अपने हाथ से लिखकर हस्ताक्षर किये थे।

महादेवीजी की इच्छा थी कि साहित्यकारों की पाण्डुलिपियाँ व स्मारक वस्तुएँ संगृहीत की जायें। लेकिन धनाभाव के कारण महादेवीजी की यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। न्यास ने अब 'छायावाद संग्रहालय' स्थापित करने का निर्णय लिया है। वसीयत के अनुसार महादेवीजी चाहती थीं कि न्यास सांस्कृतिक गतिविधियों में सहयोग देता रहे, विशिष्ट साहित्यकारों तथा कलाकारों का अभिनन्दन, देश-विदेश के साहित्यकारों का सम्मान, विशिष्ट जयंतियों व संगोष्ठियों का आयोजन, उदीयमान साहित्यकारों तथा कलाकारों को प्रोत्साहन, सामर्थ्यानुसार अनुवृत्तियाँ तथा क्षमतानुसार उत्तम साहित्य के प्रकाशन में योगदान करे।

करहु विलम्ब न भ्रात अब

प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस पर्व मनाया जाता है। धूमधाम से सरकारी कार्यालयों में हिन्दी की विजयादशमी बनाई जाती है, एक पखवारे तक अंग्रेजी के रावण को पराजित करने का संकल्प किया जाता है। इस प्रकार देश की राष्ट्रभाषा का त्योहार मनाने की रस्म अदायगी हो जाती है। पुन: अंग्रेजी का रावण सशक्त हो उठता है।

देश को स्वतंत्र हुए लगभग 56 वर्ष हो रहे हैं, इन वर्षों में भारतीय संविधान के प्राविधानों को लागू करने में अपेक्षित इच्छा शक्ति तथा दृढ़ता का अभाव होने से देश विभिन्न समस्याओं में उलझता ही जा रहा है।

किसी देश की भाषा उसके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है, उसकी भाषा को प्रतिष्ठा न देकर परायी भाषा को प्रतिष्ठा प्रदान कर उसे पराधीन बनाया जाता है। आज वही स्थिति हमारे देश में है। सरकारी दफ्तरों में हिन्दी के कारखाने खुल रहे हैं किन्तु न वह जनता तक पहुँच पा रही है, न जनता ही उस तक पहुँच पा रही है। प्रत्येक भाषा के अपने संस्कार होते हैं, व्यक्ति उन संस्कारों से अनुशासित होता है। उसका आचरण, रहन-सहन सभी में भाषा के संस्कार होते हैं। अंग्रेजी हमारे देश पर इस प्रकार लद गई कि उसने हमारे आचार-विचार, वेशभूषा, विश्वास, निष्ठा सभी को प्रभावित किया। कहने को हम भारतवासी हैं, पर हम इंडियन हैं, भाषा के कारण हमारा आचरण एंग्लो-इंडियन-सा है। यही कारण है कि देश का प्रशासन देश की जनता की समस्या को समझ नहीं पाता, उसकी संवेदना को अनुभव नहीं कर पाता क्योंकि उसकी सोच, उसकी कार्य पद्धति सभी की भाषा वही है, आचरण वही है जिसने देश को गुलाम बनाया।

7 मार्च 1835 को तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड बेंटिक ने मैकाले के प्रस्तावानुसार अंग्रेजी को शिक्षा तथा प्रशासन की भाषा घोषित किया। पुरातात्विक जेम्स प्रिन्सेप ने इसका विरोध किया था, जिससे प्राच्य विद्यालय बच गये किन्तु अंग्रेजी के विद्यालय खुलते गये। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बन गई। 35 वर्षों में शिक्षा तथा प्रशासन के क्षेत्र में अंग्रेजी इस प्रकार हावी होने लगी कि लोग देश की अस्मिता को भूलने लगे और तब जून 1877 में हिन्दीवर्द्धिनी सभा में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 98 दोहों में अपनी रचना प्रस्तुत की—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय में शूल॥

उनकी पूरी रचना 'हिन्दी प्रदीप' के सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर 1877 के अंकों में क्रमश: प्रकाशित हुई।

भारतेन्दु ने 97वें दोहे में अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए कहा—

करहु विलम्ब न भ्रात अब उठहु मिटावहु शूल।
निज भाषा उन्नति करहु प्रथम जो सबको मूल॥

हम भी भारतेन्दुजी के शब्दों को दुहराते हुए अनुरोध करते हैं—करहु विलम्ब न भ्रात अब।

जिस भाषा में हमने आज़ादी की लड़ाई लड़ी उस भाषा को देश के निर्माण में लगायें।

डॉ० महीप सिंह के शब्दों में—''हिन्दी सम्पूर्ण देश में केन्द्र की राजभाषा के रूप में स्वीकृत और समाहित होनी चाहिए और सभी भारतीय भाषाओं को अपने-अपने क्षेत्रों में राजभाषा होने, शिक्षा का माध्यम बनने, सरकारी कामकाज में पूरी तरह प्रयोग किये जाने का गौरव प्राप्त होना चाहिए। इसी में इस देश की एकता और अखण्डता के बीज विद्यमान है।''

यह उल्लेखनीय है कि 4 अक्टूबर 1977 को तत्कालीन परराष्ट्रमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में भाषण देकर हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित किया, किन्तु अपने देश में हिन्दी को प्रतिष्ठा नहीं मिली।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

स्मृति-शेष

पत्रकारिता जगत का सूर्य नरेन्द्र मोहन

'दैनिक जागरण' समाचार पत्र के प्रधान सम्पादक एवं सांसद **नरेन्द्र मोहन** का 20 सितम्बर 2002 को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में निधन हो गया। एक संघर्षशील, निर्भीक निष्पक्ष पत्रकार, राष्ट्रवादी विचारक का अन्त हो गया। वे पेट की बीमारी से दिल्ली के एम्स में भर्ती हुए, चिकित्सकीय चूक हुई, वहाँ से अपोलो अस्पताल में भरती हुए किन्तु विधना का मृत्युपत्र पर हस्ताक्षर हो चुका था।

जुझारू पिता पूर्णचन्द्र गुप्त के युवा पुत्र ने 14 मई 1965 को 'दैनिक जागरण' का विधिवत कार्य सम्भाला और कुछ ही वर्षों में देश के प्रमुख हिन्दीभाषी प्रदेशों से 'दैनिक जागरण' की शृंखला स्थापित की। उत्तर प्रदेश के 12 नगरों से, पंजाब में जालंधर से बिहार में पटना से और मध्यप्रदेश में भोपाल तथा रीवां से नयी दिल्ली और हिसार से प्रकाशित 'दैनिक जागरण' नरेन्द्र मोहनजी की कीर्तिगाथा है।

मोहन बाबू के नाम से विख्यात नरेन्द्र मोहन का 10 अक्टूबर 1934 को जन्म हुआ और 20 सितम्बर 2002 को उनका तिरोधान हो गया। हिन्दीभाषी क्षेत्र की वे ओजस्वी वाणी थे। उन्होंने सकारात्मक पत्रकारिता का विकास किया। स्वभाव से अत्यन्त मृदु, सहज और सरल, अत्यन्त अध्ययनशील व्यक्ति थे। वे केवल पत्रकार नहीं थे, हृदय से कवि, स्वभाव से राष्ट्रवादी, गीता के भक्त और प्रखर विचारक तथा चिन्तक। अस्पताल में जाँच के लिए जूनियर डॉक्टर बुलाने आया। बोले—बेटा दो मिनट रुक जाओ मेरी कविता की चार पंक्तियाँ बाकी हैं। बाकी रह गई कविता उस राष्ट्रभक्त की जिसके एक हाथ में गीता और दूसरे हाथ में सशक्त लेखनी थी।

रंगकर्मी कारंत नहीं रहे

भारत भवन; भोपाल के संस्थापक सुप्रसिद्ध नाटककार तथा रंगकर्मी **बी०वी० कारंत** का 1 सितम्बर 2002 को निधन हो गया। वे कैंसर से पीड़ित थे। वे 74 वर्ष के थे। आपकी शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। काशी के रंगकर्मी डॉ० कुँवरजी अग्रवाल आपके सहपाठी थे। काशी में आपने प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया था और अभिनय के लिए प्रसादजी के चन्द्रगुप्त नाटक का चयन किया था। उनका कहना था—''काशी का विद्यार्थी रहा हूँ। काशी और हिन्दी के मेरे ऊपर कर्ज अधिक हैं।'' 24 व 25 दिसम्बर 1972 को काशी में 'चंद्रगुप्त' नाटक का मंचन कारंतजी के निर्देशन में हुआ। उनके निधन से देश के बहुआयामी रंगकर्मी का स्थान रिक्त हो गया।

मृत्युंजय शिवाजी कारंत

31 अगस्त 1940 को आजरा, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में जन्मे **शिवाजी गोविन्दराव कारंत** की पहचान हिन्दी पाठकों के लिए उनके कर्ण के जीवन पर आधारित उपन्यास 'मृत्युंजय' से हुई। उन्होंने कर्ण को मृत्युंजय कर दिया किन्तु वे मृत्युंजय नहीं हो सके। 62 वर्ष की आयु में 18 सितम्बर 2002 को मड़गाँव गोवा में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। 'मृत्युंजय' हिन्दी में पहली बार 1978 में प्रकाशित हुआ था। सन् 2000 तक इसके 22 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। 700 पृष्ठों के इस उपन्यास के लेखन में उन्होंने कुरुक्षेत्र जाकर प्रत्येक स्थल का गम्भीर अध्ययन किया था। इसी क्रम में लम्बे अन्वेषण के पश्चात श्रीकृष्णचरित पर केन्द्रित 935 पृष्ठों का 'युगन्धर' उपन्यास इसी वर्ष भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुआ है। शिवाजी के जीवन पर आपका 'छावा' उपन्यास भी अत्यन्त लोकप्रिय है। आपने अनेक पुरस्कार अर्जित किये जिनमें प्रमुख हैं—गुजरात राज्य सरकार का साहित्य अकादमी पुरस्कार (1982), भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी पुरस्कार (1995), आचार्य अत्रे पुरस्कार पुणे (1999)। 1990 में आप नोबल पुरस्कार के लिए नामित किये गये थे।

वसंत बापट स्वर्गीय

सुप्रसिद्ध मराठी कवि, लेखक व स्वाधीनता सेनानी **प्रो० वसंत बापट** का 17 सितम्बर 2002 को सुबह निधन हो गया। उन्हें एक सप्ताह पूर्व मस्तिष्क में रक्तस्राव हुआ। उनकी सर्जरी भी हुई, अन्त तक वे अचेतावस्था में रहे।

मुकुटबिहारी सरोज

व्यंग्य गीतों के सुप्रसिद्ध गीतकार ग्वालियर निवासी **मुकुटबिहारी सरोज** का निधन हो गया। वे 76 वर्ष के थे। यह उल्लेखनीय है कि 18 सितम्बर को दिल्ली में श्री सरोज को वर्ष 2001 का काका हाथरसी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रो० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव

गोरखपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग **डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव** का लम्बी बीमारी के बाद 22 सितम्बर को लखनऊ में निधन हो गया। वे अच्छे कवि, समीक्षक तथा विचारक थे। उनका शोध ग्रन्थ 'मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य' इस विषय का प्रमुख ग्रन्थ है।

> कुछ समय से आपकी पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' मिल रही है। इसमें पुस्तक प्रकाशनों के अतिरिक्त भारतीय भाषा और साहित्य से जुड़ी अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं। यह उपयोगी प्रकाशन है और मैं इसे रुचिपूर्वक देखता और पढ़ता हूँ। **लल्लनप्रसाद व्यास**
>
> सम्पादक, विश्व हिन्दी दर्शन, नई दिल्ली

पुरस्कार-सम्मान

डॉ० वागीश शास्त्री को विष्णुतीर्थ पुरस्कार

काशी के प्रमुख संस्कृत विद्वान् **डॉ० वागीश शास्त्री** को उनकी कृति 'पराचेतना की यात्रा' पर इंदौर की स्वामी विष्णुतीर्थ पुरस्कार समिति ने वर्ष 2002 का विष्णुतीर्थ पुरस्कार देने का निश्चय किया है। पुरस्कार स्वरूप शास्त्रीजी को 51 हजार रुपये अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह द्वारा प्रदान किये जायेंगे।

प्रयाग शुक्ल को द्विजदेव पुरस्कार

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी 'रंग प्रसंग' के सम्पादक **श्री प्रयाग शुक्ल** को अयोध्या में विमला देवी फाउण्डेशन न्यास द्वारा 22 सितम्बर को साहित्य क्षेत्र में अग्रणी भूमिका के लिए द्विजदेव सम्मान दिया गया। श्री शुक्ल को काशी की प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत कलाकार गिरिजा देवी ने सम्मान स्वरूप श्रीफल, दुशाला व राशि प्रदान की। इस अवसर पर उपस्थित श्री अशोक वाजपेयी ने कहा—साहित्य व कला विराट जोड़ का वाद्यवृंद है।

कन्नड़ कवि को कबीर सम्मान

मध्य प्रदेश शासन संस्कृति विभाग ने वर्ष 2002-2003 के प्रतिष्ठापूर्ण कबीर सम्मान से प्रख्यात कन्नड़ कवि **चन्द्रशेखर काम्बार** को अलंकृत करने का निर्णय लिया है। राष्ट्रीय सम्मान के अन्तर्गत प्रशस्ति पत्र के साथ डेढ़ लाख की राशि प्रदान की जायगी।

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति संस्थान द्वारा उनके जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में 28 अगस्त, 2002 को जयपुर में साहित्यकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिन्दी जगत् के मूर्धन्य मनीषी एवं प्रेमचन्द साहित्य के मर्मज्ञ **डॉ० कमलकिशोर गोयनका** को हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उनकी अनवरत साधना एवं असाधारण योगदान के उपलक्ष्य में सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने उन्हें उत्तरीय (शाल) ओढ़ाया, स्मृति-संस्थान के अध्यक्ष श्री राधेश्याम धूत ने उन्हें प्रशस्तिका भेंट की तथा स्व० डॉ० राधेश्याम शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती शर्मा एवं उनके पुत्र डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा (कार्यक्रम के प्रायोजक) ने उन्हें श्रीफल के साथ ग्यारह हजार एक रुपये भेंट किये।

समाचार

अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करने वाला साफ्टवेयर

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर ने 'अनुसारिका' नामक साफ्टवेयर बनाया है, जो भविष्य में अंग्रेजी से हिन्दी में शत-प्रतिशत शुद्ध अनुवाद कर सकेगा।

प्रो० संजय पांडे ने बताया कि संस्थान के दो वैज्ञानिकों प्रो० आर०के०एम० सिन्हा और प्रो० अजय जैन ने अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के लिए 'अनुसारिका' नामक साफ्टवेयर ईजाद किया है। इसकी विशेषता यह है कि अंग्रेजी से हिन्दी में यह बिल्कुल शुद्ध अनुवाद कर सकेगा।

एनसीईआरटी के नये पाठ्यक्रम को मान्यता

सरकार को सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा शुरू करने का प्रयास करना चाहिए जिसमें बच्चों को सच्चाई, परस्पर सहयोग की भावना, अन्य धर्मों के प्रति सम्मान और अहिंसा की शिक्षा शामिल हो। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भी इसी तरह की शिक्षा पद्धति के पक्षधर थे। धार्मिक शिक्षा तो वास्तव में बच्चों में सद्भावना पूर्ण गुणों के विकास में मदद करने के साथ ही उनमें सहनशीलता, परस्पर सहयोग और अन्य धर्मों के प्रति सम्मान करने का भाव पैदा करती है।

उच्चतम न्यायालय द्वारा उपर्युक्त संदर्भ में माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के नये पाठ्यक्रम पर स्वीकृति की।

रामायण सम्मेलन अगले वर्ष आस्ट्रेलिया में

19वाँ अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन अगले वर्ष आस्ट्रेलिया में आयोजित किया जायेगा। सम्मेलन के स्थायी भारतीय प्रतिनिधि बाबू सिंह बाल्यान ने यह जानकारी दी।

यूपीएससी में अब अंग्रेजी जरूरी नहीं

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की सत्र 2004 की परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त हो जाएगी। सभी सेवाओं के लिए साक्षात्कार हिन्दी में भी लिया जायेगा।

लन्दन में हिन्दी

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी सभा के अध्यक्ष श्री केशरीनाथ त्रिपाठी ने लन्दन के साउथ हाल विश्व हिन्दू मन्दिर परिसर में यू०के० हिन्दी समिति द्वारा आयोजित समारोह में घोषणा की है कि लन्दन में हिन्दी की परीक्षा में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को भारत आने पर सम्मानित किया जायगा।

कला समय

'कला समय' के तेरहवें अंक का विमोचन प्रख्यात कथाकार-पत्रकार श्री कमलेश्वर तथा संस्कृतिकर्मी श्री अशोक वाजपेयी ने 16 सितम्बर को संस्कृति भवन, भोपाल में आयोजित एक समारोह में किया। इस अवसर पर जनसम्पर्क मंत्री श्री मानवेन्द्र सिंह भी उपस्थित थे।

जीवेम शरद : शतक

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा 28 सितम्बर को अपने जीवन के 81 वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। पूर्व कुलपति, जोधपुर विश्वविद्यालय एवं वरिष्ठ आचार्य, हिन्दी विभाग एवं अध्यक्ष, जाने-माने चिन्तक, आलोचक व विद्वान् प्रभावी एवं ओजस्वी वक्ता, वाणी के जादूगर, अनेक साहित्य ग्रन्थों के प्रणेता लोढ़ाजी शतायु हों, यही कामना है।

दिसम्बर 2002 तक प्रस्तुत शोध ग्रन्थ मान्य

कलकत्ता तथा उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्देश पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दिसम्बर 2002 तक शोध प्रबंध जमा करने वालों को नेट के समकक्ष मानने का निश्चय किया है। इस प्रकार लेक्चररशिप के लिए नेट की बाध्यता लागू नहीं होगी।

परिणाम है कि पुराने शोध-ग्रन्थ उलटे-पलटे जा रहे हैं, पृष्ठ के पृष्ठ फोटोस्टेट कराये जा रहे हैं और थीसिस लिखने वालों का बाजार गर्म हो गया है।

गाँधीजी के तीन बन्दर

2 अक्टूबर को प्रतिवर्ष गाँधी जयन्ती मनायी जाती है। भारत सरकार के सभी नेता और अधिकारी राजघाट पर गाँधीजी की समाधि पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और गाँधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व को स्मरण करने के साथ उनकी दिनचर्या और उनकी वस्तुओं को याद करते हैं।

भारत सरकार का राजचिह्न सारनाथ में स्थित अशोक स्तम्भ के तीन सिंह हैं जो सत्यमेव जयते की घोषणा करते हुए सरकार के सभी भवनों, प्रतिष्ठानों, पत्रों पर अंकित है और रक्षा अधिकारियों के मस्तक पर स्थित टोपियों पर शोभित हैं।

इस राजचिह्न के नीचे क्या है, इसकी ओर कभी किसी की दृष्टि नहीं गई। उसके नीचे गाँधीजी के तीन बन्दर स्थित हैं जो कहते हैं—बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो।

हमारी सरकार इस प्रकार गाँधीजी का अनुसरण कर रही है।

उड़ीसा संग्रहालय से दुर्लभ पांडुलिपियाँ गायब

भुवनेश्वर स्थित उड़ीसा सरकार के संग्रहालय से 18000 से अधिक दुर्लभ पांडुलिपियां गायब पायी गयी हैं। सरकार द्वारा हाल में करायी गयी जाँच की रिपोर्ट के अनुसार अगस्त 2000 को संग्रहालय में 15वीं से 20वीं सदी के बीच की सचित्र 300 पांडुलिपियाँ थीं। लेकिन जाँच दल ने मुआयना करने पर मई में पाया कि वहाँ केवल 19220 पांडुलिपियाँ ही बची हैं।

संग्रहालय में वेद, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, तंत्र, शिल्प शास्त्र, संगीत व्याकरण, संस्कृत पुराण, संस्कृत, गद्य संस्कृत काव्य, उड़िया गद्य, उड़िया पुरातन साहित्य फारसी पांडुलिपियाँ, बांग्ला, तेलगू, हिन्दी और सचित्र पांडुलिपियों का अद्भुत खजाना था जिसमें से कुछ दुर्लभ पांडुलिपियाँ का खो जाना एक महत्त्वपूर्ण क्षति होगी।

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद

सम्पादक
प्रो० कल्याणमल लोढ़ा
वसुंधरा मिश्र

भारतीय एवं भारतीयेतर विचारधारा में रहस्यवाद अत्यन्त प्राचीन काल से ही आधि-दैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक विवेचन के लिए सर्वमान्य रहा है। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में तो धर्म, दर्शन, योग, अध्यात्म में यह सदैव विचाराधीन रहा।

आधुनिक विज्ञान ने अपनी नई गवेषणाओं से रहस्यवाद एवं रहस्यात्मक चिन्तन को ऊर्ध्वचेतना की नई दृष्टि दी है और अनेक वैज्ञानिकों ने इस पर विचार किया है। धर्म, दर्शन और अध्यात्म की दृष्टि से रहस्यवाद का सम्यक् आकलन ही इस ग्रंथ का मुख्य प्रयोजन है।

यह ग्रन्थ रहस्यवाद का सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक और समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें विभिन्न भारतीय और भारतीयेतर साहित्यों में उपलब्ध रहस्यवाद को विषय विशेष की परिधि में नहीं आकलित किया गया है।

प्राचीन युग से लेकर अर्वाचीन युग तक रहस्यवाद की एक अविच्छिन्न धारा प्रवहमान रही है, जिसने धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति को प्रभावित किया, जो अविवाद्य है। प्राचीन और नवीनता का यह क्रमविकास प्रस्तुत ग्रन्थ का मुख्य विषय है।

विभिन्न धर्मों की रहस्यात्मक परम्पराओं में समानता विद्यमान है चाहे वे किसी भी धर्म को मानते हों। सभी रहस्यवादी, आध्यात्मिक दृष्टि से एक ही गोत्र के हैं, एक ही जाति के अन्तर्गत आते हैं। रहस्यवाद आत्मा का धर्म है और ब्रह्म का साक्षात्कार। मनुष्य जाति की सर्वोच्च उपलब्धि है अति श्रेष्ठ स्थान, आध्यात्मिकता के उच्च शिखर पर पहुँचना।

सजिल्द 320 पृष्ठ मूल्य : 250.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

बाँए से डॉ० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी, डॉ० आर० गणेशन्, कुलपति प्रो० पी० रामचन्द्र राव तथा पुरुषोत्तमदास मोदी

विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा डॉ० आर० गणेशन् की सद्य: प्रकाशित 'भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क' नामक पुस्तक का लोकार्पण समारोह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भारत कला भवन के सभागार में 23 सितम्बर 02 को विश्वविद्यालय के कुलगीत 'मधुर मनोहर अतीव सुन्दर सर्व विद्या की राजधानी' के सांस्कृतिक परिवेश में हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० पी० रामचन्द्र राव ने पुस्तक का लोकार्पण किया।

उन्होंने अपने लोकार्पण भाषण में कहा—संग्रहालयों की भूमिका इस दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है वे हमें अपने अतीत तक ले जाने में मददगार होते हैं। वे हमारी मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। संग्रहालयों में आने वाले बहुतेरे लोग वहाँ रखी प्राचीन वस्तुओं से पारिवारिक सम्बन्ध होने जैसी अनुभूति करने लगते हैं।

इस अवसर पर प्रख्यात पुराविद डॉ० राय आनंदकृष्ण ने कहा कि भारत कला भवन में रखी कलाकृतियाँ, मूर्तियाँ, वीणा के तार के समान हैं, आवश्यकता है उनको जागृत करने की। भारत कला भवन के निदेशक डॉ० टी०के० बिश्वास ने कहा कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संग्रहालयों का आम जनता से जुड़े रहना जरूरी है। उन्होंने कहा कि भारत कला भवन के पास अपार सामग्री है किन्तु स्थानाभाव के कारण उनका उचित रख-रखाव और प्रदर्शन नहीं हो पा रहा है।

समारोह की अध्यक्षता डॉ० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मूर्तियाँ अमृत कलश हैं। ज्ञान सलाका से इस अमृत कलश का ढक्कन खोलकर इसका अमृतपान कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि संग्रहालय की चीजों को जानें, उसे पढ़ें। यह विज्ञान है तो शास्त्र भी है। इनके माध्यम से अतीत का ज्ञान होता है। मूर्तियाँ बोलती हैं। हमें उनकी भाषा को समझने का प्रयास करना चाहिये। संग्रहालय विभिन्न नामों से जाने जाते रहे हैं। जादूघर, मुर्दाघर, अजायबघर भी इसे कहा गया है।

उन्होंने कहा कि भारत में पुरावशेष बहुत हैं। भारत में सूर्य की रोशनी पर्याप्त मिलती है। अत: अपने संग्रहों का प्रदर्शन विशेषत: मूर्तियों का रोशनी में की जानी चाहिये। उन्होंने बताया कि पुणे का संग्रहालय एक चश्मा व्यवसायी ने किया। यहाँ सरौता, दीपकों का अद्‌भुत संग्रह है। लकड़ी की मूर्तियाँ अब कम बन रही हैं। आने वाले दिनों में यह संग्रहालय की वस्तु मात्र रह जायगी। अत: संग्रहालय का बहुत बड़ा महत्त्व है।

गणेशन्‌जी ने हिन्दी में पुस्तक लिखकर हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ायी है वे अहिन्दी भाषी होकर हिन्दी में लिखने का साहस किया है। विश्वविद्यालय प्रकाशन ने इसे प्रकाशित कर हिन्दी का बड़ा उपकार किया है। अत: लेखक प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

विश्वविद्यालय प्रकाशन के संचालक पुरुषोत्तमदास मोदी ने वाइसचांसलर डॉ० पी० रामचन्द्र राव, समारोह के अध्यक्ष श्री नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी तथा सभाकक्ष में उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया तथा समारोह में उपस्थित होने के लिये लोगों को धन्यवाद दिया। समारोह का संचालन परागकुमार मोदी ने किया।

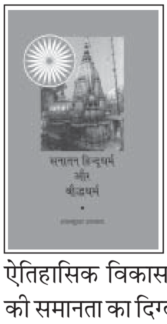

सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म

श्यामसुन्दर उपाध्याय

पेपरबैक : 75.00

हिन्दू तथा बौद्ध धर्म का ऐतिहासिक विकास तथा विस्तृत समीक्षा। दोनों धर्मों की समानता का दिग्दर्शन।

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क

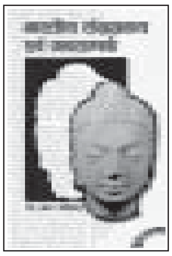

डॉ० आर० गणेशन्

वरिष्ठ तकनीकी सहायक
(कलाकार)
भारत कला भवन
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पृष्ठ : 352 अनेक चित्र

सजिल्द : 400 पेपरबैक : 250

आज की तकनीकी एवम् औद्योगिक विकास में हो रही तीव्रगामी प्रगति; जिसे आधुनिक विकास प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना जा रहा है, के फलस्वरूप भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं का विखण्डन भी साथ ही साथ होना प्रारम्भ हो चुका है। आज हमारा समाज संस्कृति विहीन विकास की ओर उन्मुख होता जा रहा है। ऐसी दुरावस्था में देश के विविध संग्रहालय एवं सांस्कृतिक आगार ही कला एवं संस्कृति का सम्बन्ध लोक से करा सकेंगे। जीवन को उससे ओत-प्रोत कर सकेंगे। उन्नत सांस्कृतिक परिवेश हेतु मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। वर्तमान परिदृश्य में यह दुरूह कार्य एक सुनियोजित प्रचार एवं जनसम्पर्कीय विधा द्वारा ही सम्भाव्य है। इसी दृष्टिकोण से डॉ० गणेशन् द्वारा लिखित भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क पुस्तक की अभिप्रायपूर्ण प्रासंगिकता है जिसमें विविध स्रोतों से प्राप्त एकत्र सामग्रियों, प्रमाणों का सूक्ष्मता से विश्लेषण कर दिया गया यथोचित निर्देश प्रस्ताव एवं सुझाव है जो इनके व्यक्तिगत अनुसन्धान का परिणाम है।

काशी का इतिहास स्वाधीन चेतना का इतिहास है। रायकृष्णदास चाहते तो भारत कला भवन के संग्रह विदेश में ले जाकर मालामाल हो जाते और विदेश में बहुत प्रतिष्ठा पाते। पर उन्होंने अपना संग्रह पहले नागरी प्रचारिणी सभा में रखा फिर उसे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को समर्पित कर दिया। संग्रह के पीछे उन्होंने अपना पूरा जीवन खपा दिया। मन में प्रश्न उठता है क्या वह काशी लुप्त हो गयी है। किसी अनजानी गुफा में लुप्त हो गयी? उत्तर में प्रतिध्वनि मिलती है कि यह लुप्त होने वाली नहीं, हर किसी के भीतर है और गली-गली में हैं उसका स्वर तरह-तरह के यांत्रिक चीत्कारों में, तरह-तरह के नारों में खो गया है। **— विद्यानिवास मिश्र**

इस समय हिन्दी की बड़ी चिन्ता यह नहीं है कि देश में उसे वह स्थान मिल पा रहा है या नहीं जो उसे मिलना चाहिए? यह चिंता भी कम ही है कि इसमें महत्त्वपूर्ण साहित्य सृजन हो रहा या नहीं? मुझे ऐसा लगता है कि इस समय की सबसे बड़ी चिन्ता यह है कि इस भाषा के कुछ वरिष्ठ लेखक इसे अपनी कुंठाओं और विकृतियों का शिकार बनाकर वातावरण को दूषित करने पर तुले हुए हैं। **—डॉ० महीप सिंह**

हिन्दी सामंजस्य, समन्वय एवं संस्कार की भाषा

हिन्दी में कार्य करने का अर्थ है सामान्य आदमी से जुड़ना, जो जनतंत्र की रीढ़ है। यह सामंजस्य, समन्वय एवं संस्कार की भाषा है।

हिन्दी सबको साथ लेकर चलने वाली भाषा है इसका संस्कार बड़े परिवार का संस्कार है। हिन्दी केवल राजभाषा नहीं बल्कि आकांक्षाओं की भाषा है। इसमें अपनापन है। अंग्रेजी प्रतिष्ठा की भाषा बनती जा रही है, जबकि प्रतिष्ठा, चरित्र और योग्यता से होती है। हिन्दी के विकास में तीर्थयात्रियों, संतों, फकीरों और व्यापारियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी को राजाज्ञा की भाषा मानकर नहीं बल्कि मानवीय भाषा मानकर सरकारी कामकाज एवं दैनिक व्यवहार में लाना चाहिए। **— विद्यानिवास मिश्र**

वर्तमान परिदृश्य में साहित्यकार त्रिलोचन के लोचन

भाषा और प्यार केवल भाषा से ही प्यार करना नहीं है। उस वक्त आप भाषा के बहाने अपने जीवन से प्यार कर रहे होते हैं। भाषा के परिवेश मनुष्य, उसमें आयी जगह से जुड़ रहे होते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ आप भाषा से जरूर प्यार कीजिए।

मुझे अपने मरने का
थोड़ा भी दु:ख नहीं
मेरे मर जाने पर
शब्दों से
मेरा संबंध
छूट जाएगा।

भाषा की लहरों में जीवन की हलचल है।
ध्वनि में क्रिया भी है और क्रिया में बल है।

— 85 वर्षीय **कवि त्रिलोचन**

❑ ❑ ❑

आज लेखकों ने साहित्य को कैरियर बना दिया है। चर्चित होने और पुरस्कृत होने में ही लेखकगण अपनी ऊर्जा नष्ट कर रहे हैं। लेखन के प्रति समर्पण का उनमें अभाव है। लेखन को किसी वाद के दायरे में सीमित नहीं करना चाहिए।

— कथाकार गोविंद मिश्र

खगोल शास्त्र व ज्योतिष

खगोल शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र दो अलग-अलग विषय हैं। स्कूलों में खगोल शास्त्र पढ़ायेंगे और कालेजों में ज्योतिष शास्त्र। हमारा विज्ञान और दर्शन दुनिया के प्राचीनतम विधाओं में एक है और हम अपनी पीढ़ियों को वही शिक्षा एवं संस्कार देना चाहते हैं जो हमारे देश के अनुकूल हो। हमारी शिक्षा भारत केन्द्रित होनी चाहिए यूरोप केन्द्रित नहीं।

अतीत से सबक लेकर भविष्य को जानने में ज्योतिष की अहम भूमिका है और इस विधा से हमारी आने वाली पीढ़ी लाभान्वित होनी चाहिए।

— मुरलीमनोहर जोशी

साहित्यकार युग से आगे चलता है। साहित्य पहले देखता है, फिर जमाना उसका अनुसरण करता है। आज भी पाठक है, पिछड़ा समझे जाने वाले बिहार में सर्वाधिक पाठक हैं। किन्तु तुलनात्मक रूप से साहित्य का महत्त्व कम हुआ है। साहित्यकार का आदर नहीं होता। अखबार में कलाकारों मॉडलों को प्राथमिकता दी जाती है, इसकी तुलना में साहित्य का कोई स्थान नहीं है। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी साहित्यकारों से विचार-विमर्श करती, उनकी राय जानती थी, किन्तु आज साहित्यकार उपेक्षा का शिकार है। किताबों को पढ़ने का आनन्द ही अलग है। जो सुख किताब को गोद में रख कर पढ़ने से मिलता है, वह इंटरनेट से मिल ही नहीं सकता है। पहले भी मतभेद होते थे, खेमेबाजी होती थी किन्तु तब संवेदना और सहभागिता भी थी। आज के साहित्यकार व्यक्तिगत रूप से दूर हो गए हैं। काफी हाउस खत्म हो गए हैं और मतभेद ने मनभेद का रूप ले लिया है। आज आलोचना व्यक्ति को देखकर की जाती है, कृति गौण हो गई है। **— विष्णु प्रभाकर**

'कला समय' से उद्धृत

प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु

डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल

प्रोफेसर

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पृष्ठ : 468 सजिल्द : 650 पेपरबैक : 450

कला के विकास की भारतीय परम्परा का इतिहास अति प्राचीन है। ताम्रप्रस्तर-युगीन सैन्धव सभ्यता से लेकर ऐतिहासिक संस्कृति के कालक्रम में

इस देश की कलाधारा अपने अजस्र प्रवहमान स्वरूप की साक्षी है। वैदिक कालीन साहित्य में प्रतिबिम्बित कलात्मक विचारों तथा क्रिया-कलापों के लिए पुरातात्त्विक प्रमाणों का अभी अभाव है। तो भी, उसी परम्परा का आगामी प्रस्फुटन शैशुनाग-नन्द, मौर्य, शुंग, आन्ध्र-सातवाहन, शक-कुषाण, गुप्त आदि राजवंशों के युगों के भवन-निर्माणों, स्मारकों एवं कलाओं के बहुमुखी उन्नयन में देखा जाता है। इन सभी कालखण्डों के लिए प्राप्त सामग्री अत्यन्त विस्तृत तथा व्यापक है। प्रस्तर-शिल्प, मृन्मय शिल्प, धातु-शिल्प, चित्रकला, अलंकरण-आभूषण, मणि-शिल्प, दंत-शिल्प, काष्ठ-शिल्प की विविध शैलियों के अध्ययन के लिए साक्ष्यों का न केवल साहित्यिक प्रत्युत पुरातात्त्विक संभार भी बहुमुखी और बहुमूल्य है। संस्कृति के विविध पक्षों में भौतिक स्तर पर हुई उपलब्धियों और तत्सम्बन्धी आदर्शों की समकालिक अभिव्यक्ति जानने-परखने के लिए कला अप्रतिम साधन है।

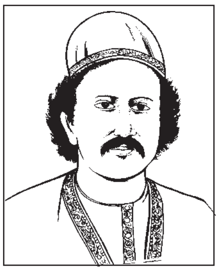

विधिक त्रुटि

हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत बाबू हरिश्चन्द्र ने अपनी किशोरावस्था में किसी महाजन से एक नाव और कुछ नकद रुपये उधार लिया था। महाजन का रुपया वापस न होने पर उसने हरिश्चन्द्र पर चक्रवृद्धि ब्याज सहित तीन हजार रुपये का दावा न्यायालय में दायर किया। यह वाद सैय्यद अहमद खाँ के न्यायालय में था। यह सैय्यद अहमद वही हैं जो बाद में 'सर' की उपाधि से अलंकृत किये गये और अलीगढ़ विश्वविद्यालय के संस्थापक बने।

सैय्यद अहमद ने बाबू हरिश्चन्द्र को अपने कक्ष में बुलाकर दावे की राशि के बारे में पूछताछ की। पर हरिश्चन्द्र ने महाजन के दावे की तीन हजार की राशि की ही पुष्टि की। अन्ततः सैय्यद अहमद ने महाजन के पक्ष में डिग्री दे दी। फलतः भार हरिश्चन्द्र को तीन हजार रुपया लौटाना पड़ा।

सैय्यद अहमद साहब ने अपने फैसले में एक विधिक त्रुटि की। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितम्बर 1850 को हुआ था। उन्होंने जब महाजन से नाव और रुपया उधार लिया था तब अवयस्क थे। जब उनके मुकदमे का निर्णय 15 अगस्त 1867 को हुआ तब भी वह अवयस्क थे। वे 9 सितम्बर 1868 को 18 वर्ष के होते और वयस्क होते। इस तथ्य पर सैय्यद अहमद ने ध्यान नहीं दिया। अगर इस तथ्य पर उन्होंने ध्यान दिया होता तो यह डिग्री हरिश्चन्द्र के पक्ष में होती क्योंकि अवयस्क को देनदारी की कानूनन कोई जिम्मेदारी नहीं होती। पर न्यायाधीश की विधिक त्रुटि के कारण हरिश्चन्द्र को ऋण वापस करना पड़ा।

— गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

अवकाशप्राप्त जिला जज

जीवन और जगत की अनुभूतियों की अमूल्य धरोहर को अक्षुण्ण और जीवन्त बनाये रखने के लिए उनको लिपिबद्ध करना नितान्त आवश्यक है। अनुभूतियाँ ही मानव जीवन और मानव सभ्यता के विकास के इतिहास की आत्मा है और लिपिबद्ध भाषा में व्यक्त साहित्य वह शरीर है जो नये-नये विचारों से गतिशीलता का स्वरूप प्राप्त करता है। इस प्रकार लिपि ने ही अनुभूतियों को साहित्य का स्वरूप प्रदान कर मानव सभ्यता और संस्कृति की सुदृढ़ आधारशिला स्थापित की है।

— प्रो० देवी सिंह चौहान

राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख उद्घोषक कवि 'दिनकर'

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के प्रमुख सचिव श्री शम्भुनाथ ने कहा कि राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' उत्तर छायावाद से जुड़े राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख उद्घोषक कवि थे। स्वतंत्रता संग्राम को उन्होंने नयी दिशा दी। उनकी प्रखर शृंगारी चेतना ने जिन रसभीनी रचनाओं का सृजन किया है उन रचनाओं का रस आज भी हम लेते हैं।

काशी विद्यापीठ पुस्तकालय समिति कक्ष में हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग की ओर से रविवार 15 सितम्बर को आयोजित 'दिनकर काव्य विमर्श' संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि 'रेणुका' काव्य रचना से दिनकर को प्रसिद्धि मिली। 1935 में आयी इस अद्‌भुत कृति में उन्होंने एक नयी भाषा का समावेश किया, जो क्रान्ति का आह्वान करती है।

दिनकरजी द्वन्द्व के साथ-साथ पलायनवादी कवि भी थे। 'कञ्चन थाल सजा वैभव' कविता में उन्होंने सौन्दर्य का चित्रण किया है। दिनकरजी जहाँ क्रान्ति की बात करते हैं, वहीं वे उसके दूसरे पक्ष को भी देखते हैं। 'रेणुका' कृति में दिनकरजी ने कहा है कि जीवनभर में गाँधी और मार्क्स अर्थात् अहिंसा और हिंसा के बीच झटके खाता रहा।

दिनकरजी की कविता में कहीं न कहीं पीड़ा है। 'जलन दर्द दिल की कसक' में उन्होंने शृंगार का वर्णन किया है। इससे सिद्ध होता है कि दिनकर में उर्वशी बसती है। दिनकरजी सम्पूर्णता में जीवन को जानने-समझने का प्रयास करते थे। द्वन्द उनकी कविता का सार है और शायद इति भी है।

द्वन्दगीत के बाद 1947 में दिनकरजी की महत्त्वपूर्ण रचना कुरुक्षेत्र का प्रकाशन हुआ। इससे पहले सामधेनी प्रकाशित हुई। गाँधीजी को व्यक्त कर लिखी गयी सामधेनी ने स्वतंत्रता संग्राम को गति देने का काम किया। 'लहू में तैर-तैर कर नहीं नहीं रही जवानियाँ' कविता में उन्होंने लहू बहाने की बात मंडित की।

दिनकरजी वीर, तेजस्वी व्यक्ति थे। 'कुरुक्षेत्र' रचना में उन्होंन महाभारत की कल्पना की है। 'आशा के दीप को जलाये रखो धर्मराज, धरती बनेगी स्वर्ग प्रीति से।' दिनकरजी की कुरुक्षेत्र की अन्तिम पंक्ति है।

काशी विद्यापीठ के वाइसचांसलर प्रोफेसर रामजनम सिंह ने कहा कि मनुष्य जो अनुभव करता है, वह उसी सन्दर्भ में उसकी व्याख्या करता है। सामान्य पुरुष की अपेक्षा कवि अतिसंवेदनशील होता है। दिनकरजी ने भी लोगों और समाज की भावनाओं को अपनी कृतियों में बखूबी से अभिव्यक्त किया है।

आपके शोध विषयक सम्पादकीय ने दिल्ली में काफी तहलका मचा रखा है, अब शोध को लेकर नया विमर्श प्रारम्भ हो रहा है। बधाई!

डॉ० कान्तिकुमार, सागर

विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रमुख ग्रन्थ

उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य	*युगेश्वर*	140.00
चरित्रहीन	*आबिद सुरती*	180.00
बबूल	*डॉ० विवेकी राय*	40.00
पांचाली	*डॉ० बच्चन सिंह*	125.00
ननकी	*बच्चन सिंह (पत्रकार)*	60.00
तरुण संन्यासी (विवेकानंद)	*राजेन्द्रमोहन भटनागर*	120.00
सागरी पताका	*राधामोहन उपाध्याय*	250.00
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास)	*प्रभुदयाल मिश्र*	120.00
कर्मभूमि	*प्रेमचंद*	40.00
निर्मला	*प्रेमचंद*	25.00
संक्षिप्त गबन	*प्रेमचंद*	30.00
गबन (सम्पूर्ण)	*प्रेमचंद*	125.00
गोदान	*प्रेमचंद*	200.00
मरने के बाद	*परिपूर्णानन्द वर्म्मा*	30.00
नसीब अपना-अपना	*विमल मित्र*	60.00
महाकवि कालिदास की आत्मकथा	*डॉ० जयशंकर द्विवेदी*	80.00
गाँधी की काँवर	*हरीन्द्र दवे*	40.00
बहुत देर कर दी	*अलीम मसरूर*	60.00
मंगला	*अनन्तगोपाल शेवड़े*	30.00
लोकऋण	*डॉ० विवेकी राय*	80.00
बनगंगी मुक्त है	*डॉ० विवेकी राय*	50.00
चौदह फेरे	*शिवानी*	100.00
ललिता	*अखिलन*	25.00
बज उठी पायलिया	*रा० वीलिनाथन्*	50.00
नया जीवन	*अखिलन*	60.00
आओ लौट चलें	*न्यायमूर्ति गणेशदत्त दूबे*	40.00

नाटक, एकांकी

देवयानी : उत्कृष्ट पौराणिक नाटक	*डॉ० एन० चन्द्रशेखरन् नायर*	20.00
मांदर बज उठा (रेडियो नाटक संकलन)	*अनिन्दिता*	150.00
शताब्दी पुरुष	*राजेन्द्रमोहन भटनागर*	100.00
ध्रुवस्वामिनी	*जयशंकर प्रसाद*	9.00
चन्द्रगुप्त	*जयशंकर प्रसाद*	25.00
स्कन्दगुप्त	*जयशंकर प्रसाद*	20.00
भारत-दुर्दशा	*भारतेन्दु हरिश्चन्द्र*	10.00
श्रीचन्द्रावली नाटिका	*भारतेन्दु हरिश्चन्द्र*	16.00
अँधेर नगरी	*भारतेन्दु हरिश्चन्द्र*	12.00
महाकवि कालिदास	*शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय'*	25.00
पूर्वार्द्ध	*डॉ० शिवमूरत सिंह*	25.00
गंगाद्वार	*पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र*	25.00
हास्यार्णव तथा उपालंभ-शतक (कविवर रसरूप)	*सं० डॉ० बटेकृष्ण*	20.00
भास्कर वर्मण (ऐतिहासिक नाटक)	*डॉ० हीरालाल तिवारी*	10.00
छोटे नाटक	*सं० डॉ० शुकदेव सिंह*	22.00
भुवनेश्वर की रचनाएँ	*सं० डॉ० शुकदेव सिंह*	30.00

हास्य-व्यंग्य

मुद्रिका रहस्य	*शरद जोशी*	60.00
कुछ महाभारत और	*शशिकान्त*	20.00
अन्नपूर्णा रचनावली	*अन्नपूर्णानन्द*	150.00
स्वर्ग में परिवार नियोजन	*ना०वि० सप्रे*	10.00

ललित निबन्ध

वाणी का क्षीर सागर	*कुबेरनाथ राय*	120.00
जगत तपोवन सो कियो	*डॉ० विवेकी राय*	100.00
किरात नदी में चन्द्र-मधु	*कुबेरनाथ राय*	80.00
कहीं दूर जब दिन ढले	*डॉ० गुणवन्त शाह*	40.00
भोर का आवाहन	*डॉ० विद्यानिवास मिश्र*	20.00
लहर पन्थी	*रामअधार सिंह*	10.00
नियति साहित्यकार की	*सुधाकर उपाध्याय*	80.00

पत्रकारिता

संसद और संवाददाता	*ललितेश्वरप्रसाद सिंह श्रीवास्तव*	150.00
इतिहास निर्माता पत्रकार	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	60.00
हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप	*बच्चन सिंह (पत्रकार)*	(यंत्रस्थ)
पत्र, पत्रकार और सरकार	*काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर*	120.00
प्रेस विधि	*डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा*	150.00
संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता	*डॉ० अशोककुमार शर्मा*	300.00
समाचार और संवाददाता	*काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर*	80.00
संवाद संकलन विज्ञान	*नारायण व्यंकटेश दामले*	50.00
स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं० दशरथप्रसाद द्विवेदी	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	120.00
हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान	*बच्चन सिंह*	40.00
आधुनिक पत्रकारिता	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	80.00
पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया	*शिवप्रसाद भारती*	200.00
आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता	*इन्द्रसेन सिंह*	120.00
The Rise And Growth of Hindi Journalism	*Dr. R.R. Bhatnagar, Ed. by Dr. Dhirendra Singh*	600.00
Mass Communication & Development	*(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta*	250.00
Journalism by Old and New Masters	*(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta*	250.00
Modern Journalism & Mass Communication	,,	250.00

संस्कृत-साहित्य

भारत विजयम्	*राधामोहन उपाध्याय*	250.00
अभिनव रस सिद्धान्त	*डॉ० दशरथ द्विवेदी*	40.00
वक्रोक्तिजीवितम्	*डॉ० दशरथ द्विवेदी*	80.00
रसाभिव्यक्ति	*डॉ० दशरथ द्विवेदी*	150.00
अभिनव का रस-विवेचन	*नगीनदास पारेख*	100.00

धर्म, दर्शन, अध्यात्म, संत-महात्मा जीवन चरित

प्रमुख ग्रन्थ

साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा व डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00

सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00

एक विश्व : एक संस्कृति *डॉ० ब्रजवल्लभ द्विवेदी* 200.00

बृहत श्लोक संग्रह *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा व अवधेशप्रसाद सिंह* 200.00

भारतीय संस्कृति और परिवर्तन की चुनौती *सं० सत्यप्रकाश मित्तल* 300.00

प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक *डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव* 200.00

भारतीय धर्म साधना *पं० गोपीनाथ कविराज* 80.00

सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 80.00

स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *भवानीलाल भारतीय* 120.00

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्‌गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00

करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00

महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00

मारण पात्र *अरुणकुमार शर्मा* 250.00

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 150.00

सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00

सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00

मनीषी की लोकयात्रा *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 200.00

साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2-3) *पं० गोपीनाथ कविराज* 130.00

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00

योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 140.00

ज्ञानगंज *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 60.00

क्रम-साधना *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 80.00

अखण्ड महायोग *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 50.00

श्रीकृष्ण प्रसंग *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 150.00

शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 100.00

दीक्षा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 80.00

सनातन-साधना की गुप्तधारा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 100.00

पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120.00

योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00

योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150.00

ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00

भारत के महान योगी (भाग 1-10) 5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00

भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00

महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00

पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00

कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00

उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली, अनु० केशवप्रसाद कायाँ* 150.00

वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00

वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00

गुप्त भारत की खोज *पॉल ब्रंटन* 125.00

जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक)* 150.00

सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00

वेद व विज्ञान *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00

श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन *शारदाप्रसाद सिंह* 40.00

रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60.00

कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80.00

कृष्ण का जीवन संगीत *डॉ० गुणवंत शाह* 300.00

हिन्दी ज्ञानेश्वरी *अनु० ना० वि० सप्रे* 180.00

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (3 खण्डों में) *श्री श्यामाचरण लाहिड़ी* 375.00

संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ० शुकदेव सिंह* 130.00

कथा राम कै गूढ़ (तुलसी) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125.00

संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150.00

कृष्णायन *रामबदन राय* 200.00

श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 100.00

बृहत श्लोक संग्रह

(सर्वधर्म सार)

सम्पादक : प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

तथा

डॉ० अवधेशप्रताप सिंह

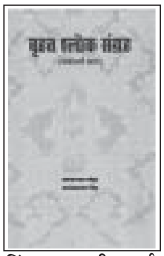

पृष्ठ : 292 सजिल्द : 200

विभिन्न धर्मशास्त्रों के मूल उद्धरण और उनका अंग्रेजी हिन्दी अनुवाद। हिन्दू धर्मशास्त्र, बौद्ध धर्मशास्त्र, जैन धर्मशास्त्र, सिक्ख धर्मशास्त्र, भक्त कवि—कबीर, फरीद, मीराबाई, गुरू गोविन्द सिंह, यहूदी धर्मशास्त्र, ईसाई धर्मशास्त्र, इस्लामी धर्मशास्त्र, पारसी धर्मशास्त्र, चीनी धर्मशास्त्र।

सर्वधर्म समभाव की परिकल्पना से परिपूर्ण ग्रन्थ।

आपका पत्र

आपकी एक टिप्पणी 'हिन्दी में शोध ग्रन्थों की उपयोगिता समाप्त हो गयी है' पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ और इस विषय पर सोच-विचार करने के लिए विवश हुआ।

लगभग 49 वर्षों तक शैक्षणिक नेतृत्व के अनेक पदों—प्रोफेसर, कुलपति, परिषद्-निदेशक, अध्यक्ष इत्यादि पर रहकर भी मैं अपने कार्य क्षेत्र में हिन्दी-शोध को कोई ऊँचा स्तर प्रदान नहीं कर सका। मेरे अन्य समकालीन और निकट पूर्ववर्त्ती भी लगभग वैसे ही निकले-मुझसे कुछ अच्छे रहे। लेकिन वास्तविक स्थिति वही है, जिसको आपने निर्दिष्ट किया है।

आपकी उक्त टिप्पणी को मैंने 'दक्षिण समाचार' (हैदराबाद, 21 अगस्त, 2002) में तथा विश्वविद्यालय प्रकाशन की पत्रिका में पढ़ा था।

डॉ० कुमार विमल

अध्यक्ष, बिहार राज्य बाल श्रमिक आयोग, पटना

❑ ❑ ❑

'भारतीय वाङ्मय' में 'चौथे आलोचक का राजर्षि अभिषेक' पढ़कर आपकी मीठी चुटकियों का खूब मजा लिया। भाई राजेन्द्र मिश्र मेरे पुराने मित्र, प्रतिभाशाली रचनाकार और प्रकांड पण्डित हैं। उनका चतुर्दिक सम्मान देखकर मुझे आन्तरिक प्रसन्नता होती है। इसी प्रकार अपने अभिन्न डॉ० नित्यानन्द पाण्डेय के निर्देशन में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं को पढ़कर भी अच्छा लगा। हिन्दी शोध पर आपकी टिप्पणी अत्यधिक सटीक और सामयिक थी।

चेन्नई में पहली बार 1983 में आया था, पूरे परिवार को रामेश्वरम दर्शन कराने के क्रम में। पिछले 20 वर्षों में भाषिक स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने यहाँ हिन्दी को जन-जन से जोड़ने और उन्हें हिन्दी की अपरिहार्यता का बोध कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ के हिन्दीभाषी प्रवासियों के सौमनस्य का भी प्रभाव पड़ा है। मुझे यह देखकर अच्छा लगा कि अब खाने की दूकानों, छोटे-छोटे होटलों में भी वस्तुओं की सूची हिन्दी में दिखने लगी है। पहले वह केवल तमिल में होती थी, जिसे अन्य राज्यों के लोग पढ़ नहीं पाते थे। होटलवालों ने इस बात को समझा और अपने को सुधारा।

— डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र

मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा)

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कारपोरेशन लिमिटेड

तेल भवन, देहरादून

स्वागत

हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'ज्ञानोदय' तीन दशकों के अंतराल के बाद पुन: नवम्बर 2002 से प्रभाकर श्रोत्रिय के सम्पादन में ज्ञानपीठ से प्रकाशित हो रही है।

पत्र-पत्रिकाएँ

भरत रंग

भरत रंग भारतेन्दु नाट्य अकादमी की अर्द्धवार्षिक पत्रिका है। प्रस्तुत अप्रैल–सितम्बर 2002 अंक में शास्त्रीय रंगमंच, आधुनिक हिन्दी रंगमंच शीर्षक के अंतर्गत रंगमंच, नाट्य लेखन के विविध संदर्भों में योगेश पन्त, डॉ० गिरीश रस्तोगी, मुद्राराक्षस, देवेन्द्र राज अंकुर, नीलम आदि के महत्त्वपूर्ण लेख हैं। आज भारतेन्दु नाट्य अकादमी ऐसी संस्थाएँ नाटक और रंगमंच की परम्परा को आगे बढ़ा रही हैं और इस विधा पर सार्थक विचार विनिमय कर रही हैं। 'भरत रंग' इसी की प्रतीक है। भारतेन्दु ने जिस नाटक और रंगमंच की सृष्टि की थी उसकी स्मृति परम्परा को आगे बढ़ाने में सराहनीय प्रयास है।

सम्पादक : सुशीलकुमार सिंह
प्रकाशक : भारतेन्दु नाट्य अकादमी
1–विकास खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ प्रत्येक अंक : 30.00

सृजन पथ

पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी नगर से प्रगतिशील सृजन, परिवर्तनकामी तथा जन पक्षधर लोक चेतना की अभिव्यक्ति को लक्ष्य में रखकर प्रकाशित **सृजनपथ** (त्रैमासिक) सराहनीय प्रयास है। अगस्त 2002 सृजन पथ का का तीसरा अंक है। 'हिन्दी कविता की परम्परा और विकास' पूनम दईया का वक्तव्य विचारणीय है। आलेख शीर्षक के अन्तर्गत डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी, डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी तथा अन्य के लेख पठनीय हैं। इनके अतिरिक्त कविताएँ, कहानियाँ, गजलें; व्यंग्य, लघु कथाएँ गीत, सृजन क्षितिज, सिलीगुड़ी की साहित्यिक गतिविधियाँ, रपट सूजन की विविधिता प्रस्तुत करती हैं। बहुविधा सम्पन्न इस पत्रिका का स्वागत है। सिलीगुड़ी ऐसे बाँग्ला प्रधान क्षेत्र से प्रकाशित यह पत्रिका साहित्यिक जागरूकता और चेतना का प्रमाण है। 200 पृष्ठों की इस पत्रिका का मूल्य पच्चीस रुपये मात्र है।

सम्पादक : रंजना श्रीवास्तव रंजू
प्रकाशक : निशात प्रकाशन
विद्युतनगर, सिलीगुड़ी–734218

अक्षर (मासिक)
सम्पादक : मनोज कुमार 'प्रीत'
सम्पर्क : डी०सी० निवास के सामने
करनाल रोड, कैथल–136027

वर्तमान संदर्भ (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० रामकुमार तिवारी
सम्पर्क : चुरू कोठी हाल, मोराबादी
राँची–834 008

शब्द (मासिक)
सम्पादक : आर०सी० यादव
सम्पर्क : सी० 1104, इन्दिरा नगर, लखनऊ

शब्द (त्रैमासिक)
सम्पादक : केदारनाथ सिंह
सम्पर्क : प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली–110 002

लोकवार्ता शोध पत्रिका (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० अर्जुनदास केसरी
सम्पर्क : लोकवार्ता शोध संस्थान
सोनभद्र–231 216

कालान्तर (मासिक)
सम्पादक : डॉ० पुष्पेश पंत
सम्पर्क : कालान्तर प्रकाशन
प्रथम तल, 29, बाजार लेन, बंगाली मार्केट
नई दिल्ली–110 001

मित्र संगम (मासिक)
सम्पादक : प्रेम वोहरा
सम्पर्क : मित्र संगम
35 बी० पुरानी गुप्ता कालोनी
दिल्ली–110 009

कथा सागर (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० तारिक असलम 'तस्नीम'
सम्पर्क : भारतीय साहित्य सृजन संस्थान
6/सेक्टर–2–हारुननगर कालोनी, फुलवारी शरीफ
पटना–801 505

अंचल भारती (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० जयनाथमणि त्रिपाठी
सम्पर्क : 7/53, देवरिया रामनाथ
देवरिया–274 001

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 3 **अक्टूबर 2002** **अंक : 10**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिन्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

रजिस्टर्ड नं० ए डी–174/2002

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी–221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vecppl@satyam.net.in